अनुभव आदान प्रदान कार्यशाला

दिनांक 23–24 अप्रैल 2010

दिनांक 23–24 अप्रैल को नवधान्य बीज विद्यापीठ रामगढ़ देहरादून में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में टिहरी एवं उत्तरकाशी से फेडरेशन के सदस्यों, चिराग नैनीताल के फेडरेशन सदस्यों ने भाग लिया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य आपसी अनुभवों का आदान–प्रदान करना, वर्ष 2011 के कार्यकारी वर्ष के लिए फेडरेशन के साथ परियोजना के अनुबन्ध पर चर्चा करना व भविष्य के लिये रणनीतियां बनाना था। कार्यशाला में जिला परियोजना प्रबन्धक, प्रबन्धक–फेडरेशन विकास, समन्वयन अधिकारी तथा मुख्यालय स्टाफ ने भी प्रतिभाग किया।

प्रथम दिवस (23 अप्रैल)

प्रातः कालीन प्रथम सत्र में कार्यशाला का शुभारम्भ, परियोजना निदेशक एवं टिहरी, उत्तरकाशी एवं चिराग के फेडरेशन प्रतिनिधियों के द्वारा दीप प्रज्जलन के साथ किया गया। इसके उपरांत ''इतनी शक्ति हमें देना दाता'' प्रार्थना की गयी।

जिला परियोजना प्रबन्धक, टिहरी ने परियोजना कार्यक्षेत्र के समूहों व फेडरेशनों के विषय में बताया कि कुल 4000 समूह गठित किये गये हैं। इन्होंने अभी तक 8 करोड़ का लेनदेन किया है तथा 6 करोड़ की CCL बनी है। समूहों ने मात्र 20 रू0 से अपनी बचत प्रारम्भ की थी जो अब 50 से 100 रू0 तक पहुंच गयी है। समूह के बाद अब फेडरेशन बने हैं। इन समूहों व फेडरेशनों ने दुकाने खोली, सोया मिल्क व पनीर बनाने का कार्य शुरू किया। इसके अतिरिक्त इन्होंने ऊनी कपड़ों, पर्यटन व बेमौसमी सब्जियों पर भी काम शुरू किया है। टिहरी, उत्तरकाशी व बागेश्वर में फेडरेशनों ने बीमा करने का काम भी शुरू किया गया। टिहरी में छः लोगों का बीमा था जिनकी मृत्यु के पश्चात उन्हें बीमा राशि दी गयी। इसके अलावा समाज कल्याण विभाग की विभिन्न योजनाओं पर भी काम किया जा रहा है। इन सभी कार्यों में निर्णय परियोजना का न होकर फेडरेशन के सदस्यों का होता है। इस तरह छोटे–छोटे काम की शुरूआत करते हुए समुदाय की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आयेगा।

परियोजना निदेशक महोदय द्वारा सभी फेडरेशन प्रतिनिधियों को शपथ दिलाई गई जो इस प्रकार थी–

- हमारी सहकारिता क्षेत्र में ग्रामीणों के हित के लिए निःस्वार्थ भाव से काम करेगी।
- सहकारिता जनपद के रेखीय विभागों, विकास परियोजना, क्षेत्र में कार्यरत स्वैच्छिक व अन्य संस्थाओं के साथ समन्वय स्थापित करेगी तथा उनके अनुभवों को साथ लेकर चलेगी।
- सहकारिता क्षेत्र में सभी समूहों को अपने साथ जोड़ेगी तथा उन्हें सशक्त करेगी।
- सहकारिता अपने धन का उपयोग सामाजिक एवं व्यवसायिक गतिविधियों के संचालन में करेगी।
- सहकारिता अपने क्षेत्र में पड़ने वाले सभी असहाय, गरीब, विधवा, विकलांग एवं सभी निशक्त परिवारों को चिन्हित कर सरकार की विकास योजनाओं जोड़ेगी।
- सहकारिता अपने क्षेत्र, जनपद, राज्य में गठित समूहों, संघों, महासंघों के साथ सम्पर्क स्थापित कर व्यावसायिक गतिविधियों का संचालन करेगी।
- सहकारिता अभिसरण से प्राप्त धन का उपयोग क्षेत्र के विकास के लिए पूर्ण पारदर्शिता के साथ करेगी तथा गतिविधियों के संचालन एवं सम्पादन में गणतंत्र भारत के विधिक नियमों का पालन करेगी।
- सहकारिता समान सोच वाले संगठनों को साथ लेकर चलेगी, कितनी भी परेशानी आने पर संगठन का साथ नहीं छोड़ेगी तथा अन्य सहकारिताओं की परेशानी पर उनका सहयोग एवं मार्गदर्शन करेगी।
- सहकारिता परियोजना कार्यों के अतिरिक्त अन्य जल, जंगल, जन, पर्यावरण संरक्षण, जमीन तथा स्वायत्त सहकारिता से जुड़े मुद्दों पर कार्य करेगी।
- समाज में व्याप्त छुआछूत एवं कुरीतियों की भावना से ऊपर उठ कर क्षेत्र व समाज के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करेगी।

चिराग संस्था नैनीताल के श्री संजीव शर्मा ने अपनी संस्था के कार्यों की जानकारी देते बताया कि वर्ष 2009 में SHG के सदस्यों ने उन्हें बताया कि क्यों न हम ऐसा कार्य करें जिससे उन्हें फायदा हो। इसके अंतर्गत **गोपालक संघ** का निर्माण हुआ। ये संघ आयुर्वेदिक दवाओं, जड़ी से दवा निर्माण व पुरानी विधि की दवाओं का निर्माण करने लगे और आपस में बांटने लगे। चिराग संस्था ने (निर्माण के लिये) 5 दवाओं का चयन किया है। उन्होंने बताया कि चूंकि पहाड़ों में पशु मात्र कृषि कार्य के लिये पाले जाते हैं, अतः संस्था ने अपने फेडरेशन के सदस्यों को व्यावसायिक स्तर पर दुग्ध उत्पादन के लिये पशुपालन करने के लिए प्रोत्साहन दिया जिसमें संस्था सदस्यों को पूरा सहयोग देगी। इसी तरह तीन फेडरेशनों का गठन हुआ।

DPM टिहरी ने टिहरी के फेडरेशनों का परिचय देते हुए बताया कि भिलंगना में **स्वायत्त सहकारिता फेडरेशन** फल संरक्षण, जड़ी बूटी, लैमन ग्रास और वनपंचायत के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। एक अन्य फेडरेशन नर्सरी तैयार करके वन विभाग को पौध देने का कार्य भी कर रहा है। प्रतापनगर की **विकास स्वायत्त सहकारिता** ने झील से लगे क्षेत्रों में CCL का पैसा लगाकर छोटी–2 दुकाने खोली हैं। इस फेडरेशन के लोग वर्षा जल का संग्रहण एवं सोयाबीन की जैविक खेती का कार्य कर रहे हैं। इन्होंने लम्बी लड़ाई लड़कर जैविक कृषि क्षेत्र में अच्छे मूल्य स्थापित किये है। उन्होंने आगे बताया कि देवप्रयाग के भूताल घाटी क्षेत्र में उड़द चना राजमा आदि दालों का व्यावसायिक उत्पादन भी किया जा रहा है। यह क्षेत्र सूखा है। अतः एलोविरा उत्पादन का कार्य भी किया जा रहा है। यहां का एक अन्य फेडरेशन कैम्पटी फॉल क्षेत्र में पर्यटन का कार्य कर रहा है। टिहरी में अब तक 7 फेडरेशनों का पंजीकरण हो चुका है।

DPM उत्तरकाशी ने बताया कि उत्तरकाशी में कुल 20 फेडरेशन हैं जिनमें से 12 पंजीकृत हैं। इन फेडरेशनों से 300 SHG जुड़े हैं जिनकी शेयर पूंजी लगभग 43 हजार है। फेडरेशन यहां पर सोयामिल्क, पनीर आदि बना रहे हैं। आपसास के स्कूलों मे सोयामिल्क व पनीर भेजा रहा है। मोरी में चावल बहुतायत से खाया जाता है लेकिन वहां चावल का उत्पादन नहीं होता है अतः वहां के लोगों को चावल उपलब्ध करवाया गया। नौगांव में एक कॉफी शॉप व एक फैक्स मशीन लगायी गयी है। पुरोला में एक रूरल मार्ट खोला गया है।

इसके बाद परियोजना निदेशक महोदय ने अपनी बात सबके समक्ष रखी। उन्होंने बताया हमारा उद्देश्य इस परियोजना के माध्यम से 100 फेडेरशन बनाने का लक्ष्य है, जो परियोजना के कार्यकाल रहने तक सशक्त हो जायेंगे। दिसम्बर 2012 तक फेडरेशन का टर्न ओवर एक करोड़ तक का करना है। इसके लिए पहले उत्पादकता बढ़ाकर उसमें वैल्यू एड़ीशन किये जाने की आवश्यकता है इससे आय में वृद्धि होगी।

प्रत्येक फेडरेशन अपने क्षेत्र का प्रतिनिधि हो। ये अपने क्षेत्र को बढ़ावा दें। दीर्घकालीन फेडरेशन बनाये जाने पर बल दें। ऐसे कार्य किये जायें जिससे सबका फायदा हो। फेडरेशन ऐसी रणनीति बनाये जिससे आपका संवाद अपने फेडरेशन के अंदर व सहयोगी संस्थाओं के साथ अत्यंत सुंदर हो।

फेडरेशन सदस्यों का अपने कार्य से भावनात्मक लगाव होना चाहिए। समूह में ज्ञान हो और इस ज्ञान का संवर्धन कैसे किया जाय, इसकी जानकारी भी हो। क्योंकि जितना ज्ञानवान आपका समूह होगा उसमें उतनी ही मजबूती होगी। आपके निर्णय भी आपके ज्ञान से प्रभावित होंगे और आपके निर्णय तभी अच्छे होंगे जब आपको अपने क्षेत्र की पूरी जानकारी होगी। नरेगा जैसी योजनाओं को लागू करने के लिए क्षमतावर्द्धन करने की आवश्यकता है। सदस्यों को राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य की योजनाओं की भी जानकारी हो। हर समूह/संघ का व्यक्तिगत व आर्थिक स्वास्थ्य अच्छा हो। स्वस्थ लोग ही अच्छी प्रकार कार्य कर पाते हैं।

प्राकृतिक आपदाओं जैसे– भूकम्प, भूस्खलन, मौसमी विषमताओं आदि से किस प्रकार निपटा जाये इसकी जानकारी भी सदस्यों को होनी चाहिये।

फेडरेशन अपने क्षेत्र की आध्यात्मिक विरासत/सम्पदा का उपयोग अपने स्तर पर करके इसको अपनी आय का साधन बना सकते हैं।

उन्होंने कहा कि हम अकेले कार्य नहीं कर सकते, अतः सदस्यों को जानकारी होनी चाहिये कि उन्हें पार्टनरशिप या सहभागिता से किस प्रकार कार्य करना चाहिए। यह पार्टनरशिप विभागों के साथ व आपस में कैसी हो। एक सेवा प्रदाता के रूप में जिन–जिन क्षेत्रों में आप कार्य कर सकते हैं उन्हें चिन्हित करें जैसे दूरदराज के क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को किस प्रकार मुहैया करवाया जा सकता है। ग्रामीण स्वास्थ्य की योजनाओं में पैरामेडिकल स्टाफ की स्कीम का फायदा किस प्रकार उठाया सकता है। आपको अच्छे संगठनों के साथ नेटवर्किंग करने की जानकारी भी होनी चाहिये।

यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि संघ आपस में विचार व मनन करें कि किये गये कार्यों से उन्हें क्या फायदा हुआ और भविष्य में वे किस प्रकार अच्छी तरह से कार्य कर सकते हैं। उन्होंने अंत में कहा कि इन सबसे ऊपर दैविक शक्ति भी हमें सशक्त बनाती है जो आपके कार्यों में आपकी सहायता भी करती है।

श्री गिरधारी जी (सफल सॉल्यूशन) ने फेडरेशन के सदस्यों में MIS System के बारे में बताया। जिसके तहत उन्होंने SHG MIS को समझाते हुए समूह रजिस्टर के महत्व एवं DIDI शीट के विषय में बातचीत की। उन्होंने बताया कि समूह में सबसे महत्वपूर्ण कार्य है पैसे का लेनदेन। रजिस्टर में जानकारियां या सूचनाएं दर्ज करते वक्त यह सुनिश्चित करें रजिस्टर को ठीक से अपडेट किया गया हो। आपके रजिस्टर एवं पासबुक दोनों में साम्यता/मेल होना चाहिए। MIS System में कम्प्यूटर में भी रिकार्ड रहता है। यदि आपको इस डाटा को परियोजना/अन्य संस्थाओं/बैंक के पास ले जाना हो कम्प्यूटर वाला डाटा दिखाना अधिक उपयुक्त व सरल है। रिपोर्ट आदि बनाने के लिए भी कम्प्यूटर से डाटा निकालना अधिक सुगम है।

कम्प्यूटर से एक पर्चा आपको दिया जायेगा। जिसमें आपने कितना ऋण लिया, कितना दिया व कितना ब्याज दिया आदि की जानकारी भरी जानी चाहिए। इसको DIDI शीट (मासिक ऋण मांग पत्र) कहते हैं। यह DIDI शीट आपको समूह बैठक से पहले मिलेगी तथा आपको बैठक के बाद भर कर वापस कलस्टर कार्यालय में जमा करनी होगी। जिसके आधार पर कम्प्यूटर में प्रवृष्टि की जायेगी।

जनपद टिहरी एवं उत्तरकाशी के फेडरेशन अध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष का एक ग्रुप बनाया जिसमें परियोजना स्टाफ के साथ फेडरेशन TOR पर विस्तार से चर्चा कर परियोजना एवं फेडरेशन ने एक समझ बनाने का प्रयास किया।

दूसरे ग्रुप में सभी फेडरेशनों द्वारा किये जा रहे कार्यों के अनुभवों का आदान–प्रदान किया–

चिराग के प्रस्तुतिकरण में श्री तारादत्त जोशी गोपालक समिति, सुयाल बाड़ी नैनीताल ने बताया कि हम लोग पुरानी संस्कृति को भूलकर, वैज्ञानिक पद्धति की ओर बढ़ रहे हैं। संघ निर्माण में हमारी सोच थी कि हर गांव के एक व्यक्ति को काम करने का मौका मिले। महिलाओं व पुरूषों की समान भागीदारी सुनिश्चित करना भी हमारा एक ध्येय था। इसके लिये हमने चार गांवों के पदाधिकारी चुने जो संख्या में 16 थे। हमने प्रत्येक फेडरेशन से प्रति तिमाही 200 रू0 शुल्क लिया। हमने पशुपालन के क्षेत्र में देशी उपचार पद्धति की बात की। इसके लिए हमने स्थानीय स्तर की जड़ी बूटियों को लाकर उन दवाओं को बनाया जो पुरानी पद्धति की थी। दूरदराज के गांवों को उन दवाओं के विषय में जागरूक किया। अभी तक हम छः प्रकार की दवाएं बना पाये हैं।

जनपद टिहरी एवं उत्तरकाशी के फेडरेशनों अपना प्रस्तुतिकरण किया–

सबसे पहले प्रगति स्वायत्त सहकारिता से प्रकाश पंवार ने अपने प्रस्तुतिकरण में अपने बिजनेस प्लान को विस्तार से समझाया।

जामणीखाल कलस्टर से श्रीमती कौंसा भट्ट ने कहा कि आज हमारे हाथों में डोर थमाई गयी है। कल पैसा आयेगा तो विवाद भी अवश्य होंगे। आज संस्था हमारे साथ है कल जब नहीं होगी तो उस स्थिति से निपटने के लिए गहन प्रशिक्षण की आवश्यकता है तभी हम सक्षम हो पायेंगे। अतः फेडरेशन के शतप्रतिशत सदस्यों को प्रशिक्षण देना आवश्यक है। इसके साथ ही फेडरेशन के सामाजिक कार्यो जैसे– चन्द्रबदनी मंदिर का कैलेण्डर बनाना, जन्म मृत्यु दर पंजीकरण, शिक्षा, ड्रॉपआउट को शिक्षा आदि के बारे में बताया।

विकास स्वायत्त सहकारिता से श्रीमती प्रमिला थपलियाल ने बताया कि हमारा फेडरेशन शत प्रतिशत गांवों में जैविक खेती का मॉड्यूल विकसित कर रहा है जिसके अन्तर्गत जैविक प्रशिक्षण का गांवों में आयोजन (जैविक कीटनियंत्रण प्रणाली), कलस्टर के गांवों में 50 प्रतिशत द्वारा IPM पद्धति को अपनाना, स्वस्थ बीजों के चयन की जानकारी/प्रयोग विधि, कम्पोस्ट व वर्मी कम्पोस्ट का प्रशिक्षण दिया जायेगा। इसके अतिरिक्त पशुपालन की जानकारी, पशुप्रजनन केन्द्र स्थापित करना, विजन बिल्डिग का प्रशिक्षण आदि भी किया जायेगा।

जनपद उत्तरकाशी से सामूहिक रूप से प्रस्तुतीकरण किया जिसमें मुख्य रूप से निम्न बिन्दु सम्मिलित थे–

- सूचनाओं का रखरखाव, उत्पादों के लिए बाजार सुनिश्चित करना, समूहों का CCL करवाना, SHG को सीड कैपिटल राशि उपलब्ध करावाना, SHG के खातों के रखरखाव के लिए कार्यकर्ताओं की नियुक्तियां, जेंडर गतिविधियां, महिलाओं के कार्यबोझ को कम करने संबंधी गतिविधियां जैसे चारानांद आदि
- क्षमता निर्माण कार्य योजना बनाना।
- परियोजना के साथ भ्रमण प्रशिक्षण व कार्यशाला का अनुबंध
- परियोजना गांवों के SHG की सहभागिता संबंधी जानकारी, समूह आपस में मिलकर अनुभवों का आदान प्रदान कर व अपना स्वयं का मूल्यांकन करें।
- अभिसरण– फेडरेशन के माध्यम से रेखीय विभाग, परियेजना व SHG के साथ
- वन पंचायत के प्रतिनिधियों को प्रशिक्षण

- पंचायतीराज संस्थानों के प्रतिनिधियों को प्रशिक्षण

द्वितीय दिवस (दिनांक 24 अप्रैल)

द्वितीय दिवस की शुरूआत प्रार्थना के साथ करते हुए कार्यशाला के प्रथम दिवस में की गई चर्चाओं को दोहराया गया। इसके बाद फेडरेशन के सदस्यों द्वारा फेडरेशन ग्रेडिंग के मापदंड बनाने हेतु तीन समूह बनाये गये। समूह चर्चा के उपरान्त प्रस्तुतीकरण किया। जिसमें मुख्य रूप से निम्न बिन्दु निकलकर आये–

- कितने सदस्यों को फेडरेशन बनने के बाद लाभ मिला
- समाजकल्याण के कौन से कार्य किये गये
- जैविक खेती का कार्य प्रारम्भ किया या नहीं
- जंगल में आग लगने से बचने के क्या क्या उपाय किये
- कितनी व्यवसायिक गतिविधियां की गयी।
- कितना आय व्यय किया गया।
- अभिसरण– किस फेडरेशन ने दाताओं से कितनी गतिविधियों के लिए कितनी धनराशि एकत्र की।
- किस फेडरेशन का लेखा प्रबन्धन का कार्य उत्तम है।
- फेडरेशन इंफ्रास्ट्रक्चर को भी ग्रेडिंग का मानक बताया गया।
- सहकारिता के टर्नओवर को भी ग्रेडिंग के लिए आवश्यक बताया गया।
- पारदर्शिता भी एक मानक के रूप में आयी।
- सामाजिक कार्य के आधार पर जैसे कन्या भ्रूण हत्या, कुरीतियों को दूर करना, जातिवाद को समूल नष्ट करना, जन्म मृत्यु के प्रमाणपत्र, मद्यनिषेध आदि के लिए फेडरेशन क्या कर रहे हैं
- जल संरक्षण, पर्यावरण, जल बचाव, पर्यावरण के लिए कौन सी पहल की गयी,सोलर चर्खे का विपणन
- सरकारी योजनाओं जैसे RTI, NABARD की कितनी कार्यशालाएं की गयी
- क्षमता विकास के लिए कितने शिविर लगाये गये ताकि उनकी आजीविका में वृद्धि हो

तय किया गया कि उक्त बिन्दुओं के आधार पर परियोजना द्वारा एक समग्र फेडरेशन ग्रेडिंग मॉड्यूल विकसित किया जायेगा।

RML कम्पनी से श्री सर्वेश एवं हरविंदर ने किसानों के लिए प्रारम्भ की गयी मोबाइल SMS सेवा के विषय में विस्तार से जानकारी दी। यह सेवा परियोजना द्वारा अभी प्रारम्भ की है। इसके तहत किन्ही दो फसलों के, दो मंडियों के भाव प्रतिदिन के दिन दो बार दिये जाते हैं। मांग के आधार पर मौसम की जानकारी, फसल बीमारियों की जानकारी भी उपलब्ध करायी जाती है। इसके तहत किसानों को एक टोल फ्री नं0 भी दिया जाता है जिस पर वह फोन द्वारा अपनी SMS सुविधा में बदलाव भी करा सकते हैं।

फेडरेशन स्तर पर एक लघु पुस्तकालय/रिसोर्स सेन्टर स्थापित करने पर चर्चा की गई। जिसमें पुस्तकों के व्यवस्थित रखरखाव के बारे में बताया गया। सभी फेडरेशनों को परियोजना के प्रकाशन तथा आपदा प्रबन्धन से सम्बन्धित साहित्य वितरित किया गया।

कार्यशाला के समापन पर प्रतिभागियों ने बताया कि इस कार्यशाला के बाद हमारी समझ काफी विकसित हुई है। अब लग रहा है कि अभी बहुत मेहनत की आवश्यकता है। बहुत सारे काम करने हैं। इसके लिए उन्होंने परियोजना से सहयोग की अपेक्षा की।

चिराग से आये फेडरेशन ने कहा आप लोग अलग काम कर रहे हैं हम अलग कर रहे हैं। यहां आकर बहुत अच्छा लगा। बहुत कुछ सीखने को मिला। यदि सभी जगह के फेडरेशन आपस में इस तरह से मिलेंगे तो अच्छा काम कर सकते हैं। एक दूसरे की जानकारियां एवं बाजार का लेनदेन कर सकेंगे। उन्होंने परियोजना द्वारा इस कार्यशाला में आमंत्रित किये जाने पर आभार प्रकट किया।

अनुभव आदान प्रदान कार्यशाला

दिनांक 23–24 अप्रैल 2010

दिनांक 23–24 अप्रैल को नवधान्य बीज विद्यापीठ रामगढ़ देहरादून में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में टिहरी एवं उत्तरकाशी से फेडरेशन के सदस्यों, चिराग नैनीताल के फेडरेशन सदस्यों ने भाग लिया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य आपसी अनुभवों का आदान–प्रदान करना, वर्ष 2011 के कार्यकारी वर्ष के लिए फेडरेशन के साथ परियोजना के अनुबन्ध पर चर्चा करना व भविष्य के लिये रणनीतियां बनाना था। कार्यशाला में जिला परियोजना प्रबन्धक, प्रबन्धक–फेडरेशन विकास, समन्वयन अधिकारी तथा मुख्यालय स्टाफ ने भी प्रतिभाग किया।

प्रथम दिवस (23 अप्रैल)

प्रातः कालीन प्रथम सत्र में कार्यशाला का शुभारम्भ, परियोजना निदेशक एवं टिहरी, उत्तरकाशी एवं चिराग के फेडरेशन प्रतिनिधियों के द्वारा दीप प्रज्जलन के साथ किया गया। इसके उपरांत ''इतनी शक्ति हमें देना दाता'' प्रार्थना की गयी।

जिला परियोजना प्रबन्धक, टिहरी ने परियोजना कार्यक्षेत्र के समूहों व फेडरेशनों के विषय में बताया कि कुल 4000 समूह गठित किये गये हैं। इन्होंने अभी तक 8 करोड़ का लेनदेन किया है तथा 6 करोड़ की CCL बनी है। समूहों ने मात्र 20 रू0 से अपनी बचत प्रारम्भ की थी जो अब 50 से 100 रू0 तक पहुंच गयी है। समूह के बाद अब फेडरेशन बने हैं। इन समूहों व फेडरेशनों ने दुकाने खोली, सोया मिल्क व पनीर बनाने का कार्य शुरू किया। इसके अतिरिक्त इन्होंने ऊनी कपड़ों, पर्यटन व बेमौसमी सब्जियों पर भी काम शुरू किया है। टिहरी, उत्तरकाशी व बागेश्वर में फेडरेशनों ने बीमा करने का काम भी शुरू किया गया। टिहरी में छः लोगों का बीमा था जिनकी मृत्यु के पश्चात उन्हें बीमा राशि दी गयी। इसके अलावा समाज कल्याण विभाग की विभिन्न योजनाओं पर भी काम किया जा रहा है। इन सभी कार्यों में निर्णय परियोजना का न होकर फेडरेशन के सदस्यों का होता है। इस तरह छोटे–छोटे काम की शुरूआत करते हुए समुदाय की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आयेगा।

परियोजना निदेशक महोदय द्वारा सभी फेडरेशन प्रतिनिधियों को शपथ दिलाई गई जो इस प्रकार थी–

- हमारी सहकारिता क्षेत्र में ग्रामीणों के हित के लिए निःस्वार्थ भाव से काम करेगी।
- सहकारिता जनपद के रेखीय विभागों, विकास परियोजना, क्षेत्र में कार्यरत स्वैच्छिक व अन्य संस्थाओं के साथ समन्वय स्थापित करेगी तथा उनके अनुभवों को साथ लेकर चलेगी।
- सहकारिता क्षेत्र में सभी समूहों को अपने साथ जोड़ेगी तथा उन्हें सशक्त करेगी।
- सहकारिता अपने धन का उपयोग सामाजिक एवं व्यवसायिक गतिविधियों के संचालन में करेगी।
- सहकारिता अपने क्षेत्र में पड़ने वाले सभी असहाय, गरीब, विधवा, विकलांग एवं सभी निशक्त परिवारों को चिन्हित कर सरकार की विकास योजनाओं जोड़ेगी।
- सहकारिता अपने क्षेत्र, जनपद, राज्य में गठित समूहों, संघों, महासंघों के साथ सम्पर्क स्थापित कर व्यावसायिक गतिविधियों का संचालन करेगी।
- सहकारिता अभिसरण से प्राप्त धन का उपयोग क्षेत्र के विकास के लिए पूर्ण पारदर्शिता के साथ करेगी तथा गतिविधियों के संचालन एवं सम्पादन में गणतंत्र भारत के विधिक नियमों का पालन करेगी।
- सहकारिता समान सोच वाले संगठनों को साथ लेकर चलेगी, कितनी भी परेशानी आने पर संगठन का साथ नहीं छोड़ेगी तथा अन्य सहकारिताओं की परेशानी पर उनका सहयोग एवं मार्गदर्शन करेगी।

- सहकारिता परियोजना कार्यों के अतिरिक्त अन्य जल, जंगल, जन, पर्यावरण संरक्षण, जमीन तथा स्वायत्त सहकारिता से जुड़े मुद्दों पर कार्य करेगी।
- समाज में व्याप्त छुआछूत एवं कुरीतियों की भावना से ऊपर उठ कर क्षेत्र व समाज के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करेगी।

चिराग संस्था नैनीताल के श्री संजीव शर्मा ने अपनी संस्था के कार्यों की जानकारी देते बताया कि वर्ष 2009 में SHG के सदस्यों ने उन्हें बताया कि क्यों न हम ऐसा कार्य करें जिससे उन्हें फायदा हो। इसके अंतर्गत **गोपालक संघ** का निर्माण हुआ। ये संघ आयुर्वेदिक दवाओं, जड़ी से दवा निर्माण व पुरानी विधि की दवाओं का निर्माण करने लगे और आपस में बांटने लगे। चिराग संस्था ने (निर्माण के लिये) 5 दवाओं का चयन किया है। उन्होंने बताया कि चूंकि पहाड़ों में पशु मात्र कृषि कार्य के लिये पाले जाते हैं, अतः संस्था ने अपने फेडरेशन के सदस्यों को व्यावसायिक स्तर पर दुग्ध उत्पादन के लिये पशुपालन करने के लिए प्रोत्साहन दिया जिसमें संस्था सदस्यों को पूरा सहयोग देगी। इसी तरह तीन फेडरेशनों का गठन हुआ।

DPM टिहरी ने टिहरी के फेडरेशनों का परिचय देते हुए बताया कि भिलंगना में **स्वायत्त सहकारिता फेडरेशन** फल संरक्षण, जड़ी बूटी, लैमन ग्रास और वनपंचायत के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। एक अन्य फेडरेशन नर्सरी तैयार करके वन विभाग को पौध देने का कार्य भी कर रहा है। प्रतापनगर की **विकास स्वायत्त सहकारिता** ने झील से लगे क्षेत्रों में CCL का पैसा लगाकर छोटी–2 दुकाने खोली हैं। इस फेडरेशन के लोग वर्षा जल का संग्रहण एवं सोयाबीन की जैविक खेती का कार्य कर रहे हैं। इन्होंने लम्बी लड़ाई लड़कर जैविक कृषि क्षेत्र में अच्छे मूल्य स्थापित किये है। उन्होंने आगे बताया कि देवप्रयाग के भूताल घाटी क्षेत्र में उड़द चना राजमा आदि दालों का व्यावसायिक उत्पादन भी किया जा रहा है। यह क्षेत्र सूखा है। अतः एलोविरा उत्पादन का कार्य भी किया जा रहा है। यहां का एक अन्य फेडरेशन कैम्पटी फॉल क्षेत्र में पर्यटन का कार्य कर रहा है। टिहरी में अब तक 7 फेडरेशनों का पंजीकरण हो चुका है।

DPM उत्तरकाशी ने बताया कि उत्तरकाशी में कुल 20 फेडरेशन हैं जिनमें से 12 पंजीकृत हैं। इन फेडरेशनों से 300 SHG जुड़े हैं जिनकी शेयर पूंजी लगभग 43 हजार है। फेडरेशन यहां पर सोयामिल्क, पनीर आदि बना रहे हैं। आपसास के स्कूलों मे सोयामिल्क व पनीर भेजा रहा है। मोरी में चावल बहुतायत से खाया जाता है लेकिन वहां चावल का उत्पादन नहीं होता है अतः वहां के लोगों को चावल उपलब्ध करवाया गया। नौगांव में एक कॉफी शॉप व एक फैक्स मशीन लगायी गयी है। पुरोला में एक रूरल मार्ट खोला गया है।

इसके बाद परियोजना निदेशक महोदय ने अपनी बात सबके समक्ष रखी। उन्होंने बताया हमारा उद्देश्य इस परियोजना के माध्यम से 100 फेडरेशन बनाने का लक्ष्य है, जो परियोजना के कार्यकाल रहने तक सशक्त हो जायेंगे। दिसम्बर 2012 तक फेडरेशन का टर्न ओवर एक करोड़ तक का करना है। इसके लिए पहले उत्पादकता बढ़ाकर उसमें वैल्यू एड़ीशन किये जाने की आवश्यकता है इससे आय में वृद्धि होगी।

प्रत्येक फेडरेशन अपने क्षेत्र का प्रतिनिधि हो। ये अपने क्षेत्र को बढ़ावा दें। दीर्घकालीन फेडरेशन बनाये जाने पर बल दें। ऐसे कार्य किये जायें जिससे सबका फायदा हो। फेडरेशन ऐसी रणनीति बनाये जिससे आपका संवाद अपने फेडरेशन के अंदर व सहयोगी संस्थाओं के साथ अत्यंत सुंदर हो।

फेडरेशन सदस्यों का अपने कार्य से भावनात्मक लगाव होना चाहिए। समूह में ज्ञान हो और इस ज्ञान का संवर्धन कैसे किया जाय, इसकी जानकारी भी हो। क्योंकि जितना ज्ञानवान आपका समूह होगा उसमें उतनी ही मजबूती होगी। आपके निर्णय भी आपके ज्ञान से प्रभावित होंगे और आपके निर्णय तभी अच्छे होंगे जब आपको अपने क्षेत्र की पूरी जानकारी होगी। नरेगा जैसी योजनाओं को लागू करने के लिए क्षमतावर्द्धन करने की आवश्यकता है। सदस्यों को राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य की योजनाओं की भी जानकारी हो। हर समूह/संघ का व्यक्तिगत व आर्थिक स्वास्थ्य अच्छा हो। स्वस्थ लोग ही अच्छी प्रकार कार्य कर पाते हैं।

प्राकृतिक आपदाओं जैसे– भूकम्प, भूस्खलन, मौसमी विषमताओं आदि से किस प्रकार निपटा जाये इसकी जानकारी भी सदस्यों को होनी चाहिये।

फेडरेशन अपने क्षेत्र की आध्यात्मिक विरासत/सम्पदा का उपयोग अपने स्तर पर करके इसको अपनी आय का साधन बना सकते हैं।

उन्होंने कहा कि हम अकेले कार्य नहीं कर सकते, अतः सदस्यों को जानकारी होनी चाहिये कि उन्हें पार्टनरशिप या सहभागिता से किस प्रकार कार्य करना चाहिए। यह पार्टनरशिप विभागों के साथ व आपस में कैसी हो। एक सेवा प्रदाता के रूप में जिन–जिन क्षेत्रों में आप कार्य कर सकते हैं उन्हें चिन्हित करें जैसे दूरदराज के क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को किस प्रकार मुहैया करवाया जा सकता है। ग्रामीण स्वास्थ्य की योजनाओं में पैरामेडिकल स्टाफ की स्कीम का फायदा किस प्रकार उठाया सकता है। आपको अच्छे संगठनों के साथ नेटवर्किंग करने की जानकारी भी होनी चाहिये।

यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि संघ आपस में विचार व मनन करें कि किये गये कार्यों से उन्हें क्या फायदा हुआ और भविष्य में वे किस प्रकार अच्छी तरह से कार्य कर सकते हैं। उन्होंने अंत में कहा कि इन सबसे ऊपर दैविक शक्ति भी हमें सशक्त बनाती है जो आपके कार्यों में आपकी सहायता भी करती है।

श्री गिरधारी जी (सफल सॉल्यूशन) ने फेडरेशन के सदस्यों में MIS System के बारे में बताया। जिसके तहत उन्होंने SHG MIS को समझाते हुए समूह रजिस्टर के महत्व एवं DIDI शीट के विषय में बातचीत की। उन्होंने बताया कि समूह में सबसे महत्वपूर्ण कार्य है पैसे का लेनदेन। रजिस्टर में जानकारियां या सूचनाएं दर्ज करते वक्त यह सुनिश्चित करें रजिस्टर को ठीक से अपडेट किया गया हो। आपके रजिस्टर एवं पासबुक दोनों में साम्यता/मेल होना चाहिए। MIS System में कम्प्यूटर में भी रिकार्ड रहता है। यदि आपको इस डाटा को परियोजना/अन्य संस्थाओं/बैंक के पास ले जाना हो कम्प्यूटर वाला डाटा दिखाना अधिक उपयुक्त व सरल है। रिपोर्ट आदि बनाने के लिए भी कम्प्यूटर से डाटा निकालना अधिक सुगम है।

कम्प्यूटर से एक पर्चा आपको दिया जायेगा। जिसमें आपने कितना ऋण लिया, कितना दिया व कितना ब्याज दिया आदि की जानकारी भरी जानी चाहिए। इसको DIDI शीट (मासिक ऋण मांग पत्र) कहते हैं। यह DIDI शीट आपको समूह बैठक से पहले मिलेगी तथा आपको बैठक के बाद भर कर वापस कलस्टर कार्यालय में जमा करनी होगी। जिसके आधार पर कम्प्यूटर में प्रवृष्टि की जायेगी।

जनपद टिहरी एवं उत्तरकाशी के फेडरेशन अध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष का एक ग्रुप बनाया जिसमें परियोजना स्टाफ के साथ फेडरेशन TOR पर विस्तार से चर्चा कर परियोजना एवं फेडरेशन ने एक समझ बनाने का प्रयास किया।

दूसरे ग्रुप में सभी फेडरेशनों द्वारा किये जा रहे कार्यों के अनुभवों का आदान–प्रदान किया–

चिराग के प्रस्तुतिकरण में श्री तारादत्त जोशी गोपालक समिति, सुयाल बाड़ी नैनीताल ने बताया कि हम लोग पुरानी संस्कृति को भूलकर, वैज्ञानिक पद्धति की ओर बढ़ रहे हैं। संघ निर्माण में हमारी सोच थी कि हर गांव के एक व्यक्ति को काम करने का मौका मिले। महिलाओं व पुरूषों की समान भागीदारी सुनिश्चित करना भी हमारा एक ध्येय था। इसके लिये हमने चार गांवों के पदाधिकारी चुने जो संख्या में 16 थे। हमने प्रत्येक फेडरेशन से प्रति तिमाही 200 रू0 शुल्क लिया। हमने पशुपालन के क्षेत्र में देशी उपचार पद्धति की बात की। इसके लिए हमने स्थानीय स्तर की जड़ी बूटियों को लाकर उन दवाओं को

बनाया जो पुरानी पद्धति की थी। दूरदराज के गांवों को उन दवाओं के विषय में जागरूक किया। अभी तक हम छः प्रकार की दवाएं बना पाये हैं।

जनपद टिहरी एवं उत्तरकाशी के फेडरेशनों अपना प्रस्तुतिकरण किया–

सबसे पहले प्रगति स्वायत्त सहकारिता से प्रकाश पंवार ने अपने प्रस्तुतिकरण में अपने बिजनेस प्लान को विस्तार से समझाया।

जामणीखाल कलस्टर से श्रीमती कौंसा भट्ट ने कहा कि आज हमारे हाथों में डोर थमाई गयी है। कल पैसा आयेगा तो विवाद भी अवश्य होंगे। आज संस्था हमारे साथ है कल जब नहीं होगी तो उस स्थिति से निपटने के लिए गहन प्रशिक्षण की आवश्यकता है तभी हम सक्षम हो पायेंगे। अतः फेडरेशन के शतप्रतिशत सदस्यों को प्रशिक्षण देना आवश्यक है। इसके साथ ही फेडरेशन के सामाजिक कार्यो जैसे– चन्द्रबदनी मंदिर का कैलेण्डर बनाना, जन्म मृत्यु दर पंजीकरण, शिक्षा, ड्रॉपआउट को शिक्षा आदि के बारे में बताया।

विकास स्वायत्त सहकारिता से श्रीमती प्रमिला थपलियाल ने बताया कि हमारा फेडरेशन शत प्रतिशत गांवों में जैविक खेती का मॉड्यूल विकसित कर रहा है जिसके अन्तर्गत जैविक प्रशिक्षण का गांवों में आयोजन (जैविक कीटनियंत्रण प्रणाली), कलस्टर के गांवों में 50 प्रतिशत द्वारा IPM पद्धति को अपनाना, स्वस्थ बीजों के चयन की जानकारी/प्रयोग विधि, कम्पोस्ट व वर्मी कम्पोस्ट का प्रशिक्षण दिया जायेगा। इसके अतिरिक्त पशुपालन की जानकारी, पशुप्रजनन केन्द्र स्थापित करना, विजन बिल्डिग का प्रशिक्षण आदि भी किया जायेगा।

जनपद उत्तरकाशी से सामूहिक रूप से प्रस्तुतीकरण किया जिसमें मुख्य रूप से निम्न बिन्दु सम्मिलित थे–

- सूचनाओं का रखरखाव, उत्पादों के लिए बाजार सुनिश्चित करना, समूहों का CCL करवाना, SHG को सीड कैपिटल राशि उपलब्ध करावाना, SHG के खातों के रखरखाव के लिए कार्यकर्ताओं की नियुक्तियां, जेंडर गतिविधियां, महिलाओं के कार्यबोझ को कम करने संबंधी गतिविधियां जैसे चारानांद आदि
- क्षमता निर्माण कार्य योजना बनाना।
- परियोजना के साथ भ्रमण प्रशिक्षण व कार्यशाला का अनुबंध
- परियोजना गांवों के SHG की सहभागिता संबंधी जानकारी, समूह आपस में मिलकर अनुभवों का आदान प्रदान कर व अपना स्वयं का मूल्यांकन करें।
- अभिसरण– फेडरेशन के माध्यम से रेखीय विभाग, परियेजना व SHG के साथ
- वन पंचायत के प्रतिनिधियों को प्रशिक्षण
- पंचायतीराज संस्थानों के प्रतिनिधियों को प्रशिक्षण

द्वितीय दिवस (दिनांक 24 अप्रैल)

द्वितीय दिवस की शुरूआत प्रार्थना के साथ करते हुए कार्यशाला के प्रथम दिवस में की गई चर्चाओं को दोहराया गया। इसके बाद फेडरेशन के सदस्यों द्वारा फेडरेशन ग्रेडिंग के मापदंड बनाने हेतु तीन समूह बनाये गये। समूह चर्चा के उपरान्त प्रस्तुतीकरण किया। जिसमें मुख्य रूप से निम्न बिन्दु निकलकर आये–

- कितने सदस्यों को फेडरेशन बनने के बाद लाभ मिला
- समाजकल्याण के कौन से कार्य किये गये
- जैविक खेती का कार्य प्रारम्भ किया या नहीं
- जंगल में आग लगने से बचने के क्या क्या उपाय किये
- कितनी व्यवसायिक गतिविधियां की गयी।
- कितना आय व्यय किया गया।
- अभिसरण– किस फेडरेशन ने दाताओं से कितनी गतिविधियों के लिए कितनी धनराशि एकत्र की।
- किस फेडरेशन का लेखा प्रबन्धन का कार्य उत्तम है।
- फेडरेशन इंफ्रास्ट्रक्चर को भी ग्रेडिंग का मानक बताया गया।
- सहकारिता के टर्नओवर को भी ग्रेडिंग के लिए आवश्यक बताया गया।

- पारदर्शिता भी एक मानक के रूप में आयी।
- सामाजिक कार्य के आधार पर जैसे कन्या भ्रूण हत्या, कुरीतियों को दूर करना, जातिवाद को समूल नष्ट करना, जन्म मृत्यु के प्रमाणपत्र, मद्यनिषेध आदि के लिए फेडरेशन क्या कर रहे हैं
- जल संरक्षण, पर्यावरण, जल बचाव, पर्यावरण के लिए कौन सी पहल की गयी,सोलर चर्खे का विपणन
- सरकारी योजनाओं जैसे RTI, NABARD की कितनी कार्यशालाएं की गयी
- क्षमता विकास के लिए कितने शिविर लगाये गये ताकि उनकी आजीविका में वृद्धि हो

तय किया गया कि उक्त बिन्दुओं के आधार पर परियोजना द्वारा एक समग्र फेडरेशन ग्रेडिंग मॉड्यूल विकसित किया जायेगा।

RML कम्पनी से श्री सर्वेश एवं हरविंदर ने किसानों के लिए प्रारम्भ की गयी मोबाइल SMS सेवा के विषय में विस्तार से जानकारी दी। यह सेवा परियोजना द्वारा अभी प्रारम्भ की है। इसके तहत किन्ही दो फसलों के, दो मंडियों के भाव प्रतिदिन के दिन दो बार दिये जाते हैं। मांग के आधार पर मौसम की जानकारी, फसल बीमारियों की जानकारी भी उपलब्ध करायी जाती है। इसके तहत किसानों को एक टोल फ्री नं0 भी दिया जाता है जिस पर वह फोन द्वारा अपनी SMS सुविधा में बदलाव भी करा सकते हैं।

फेडरेशन स्तर पर एक लघु पुस्तकालय/रिसोर्स सेन्टर स्थापित करने पर चर्चा की गई। जिसमें पुस्तकों के व्यवस्थित रखरखाव के बारे में बताया गया। सभी फेडरेशनों को परियोजना के प्रकाशन तथा आपदा प्रबन्धन से सम्बन्धित साहित्य वितरित किया गया।

कार्यशाला के समापन पर प्रतिभागियों ने बताया कि इस कार्यशाला के बाद हमारी समझ काफी विकसित हुई है। अब लग रहा है कि अभी बहुत मेहनत की आवश्यकता है। बहुत सारे काम करने हैं। इसके लिए उन्होंने परियोजना से सहयोग की अपेक्षा की।

चिराग से आये फेडरेशन ने कहा आप लोग अलग काम कर रहे हैं हम अलग कर रहे हैं। यहां आकर बहुत अच्छा लगा। बहुत कुछ सीखने को मिला। यदि सभी जगह के फेडरेशन आपस में इस तरह से मिलेंगे तो अच्छा काम कर सकते हैं। एक दूसरे की जानकारियां एवं बाजार का लेनदेन कर सकेंगे। उन्होंने परियोजना द्वारा इस कार्यशाला में आमंत्रित किये जाने पर आभार प्रकट किया।

प्रबन्धक KMIT द्वारा सभी का धन्यवाद देते हुए कार्यशाला का समापन किया गया।